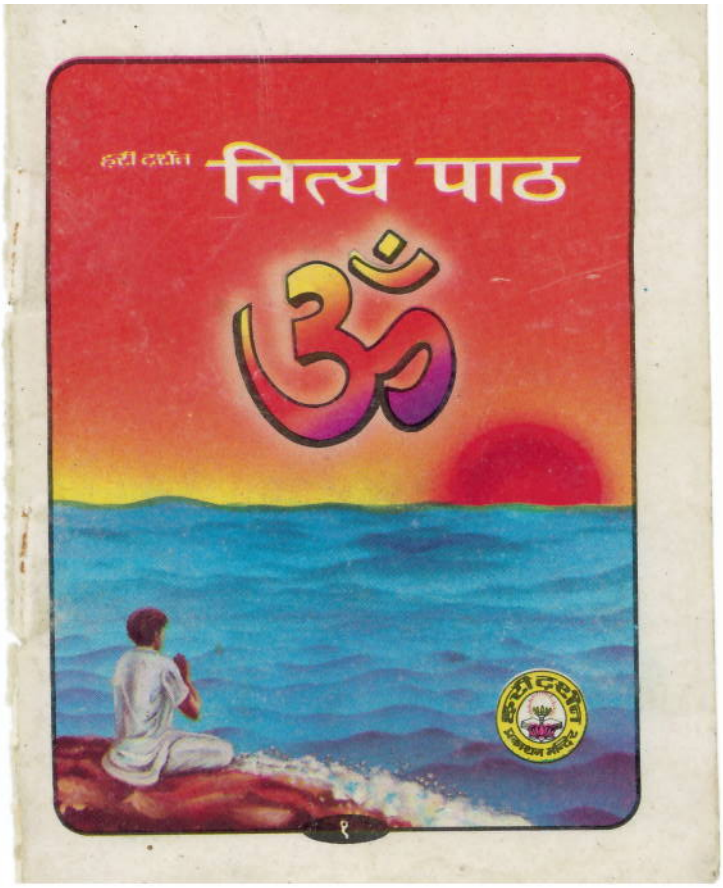

हरी दर्शन

नित्य पाठ

प्रकाशकः
हरी दर्शन प्रकाशन मन्दिर
(हरी दर्शन धूप एवं अगरबत्ती बनाने वालों की एक सहयोगी संस्था)
फ्लैट नं. 27बी, न्यू कुतुब रोड,
सदर बाजार, दिल्ली–6
दूरभाषः 3554446

Visit us at :
www.haridarshanprakashan.com

साज सज्जा एव मुद्रण :
जितेन्द्रा आर्ट प्रेस
शाहदरा, दिल्ली–110 032
दूरभाष : 2118504, 2278504

मूल्य– 6.00 रुपए

लक्ष्मी धूप फैक्ट्री–दिल्ली,
रजि. प्रोप्राईटर ऑफ ट्रैड मार्क 'हरिदर्शन'

उत्सवों तथा मंदिरों में प्रचार के लिए भेंट करने वाले महानुभाव प्रकाशक से सम्पर्क करें। उन्हें पुस्तक लागत मूल्य पर दी जायेंगी।

निवेदन

भारत के ऋषि, मुनियों ने प्रत्येक व्यक्ति को कार्य क्षेत्र में रहते हुए भी, ईश्वर भजन की सलाह दी है। अपने आचार्यों की आज्ञा का पालन करते हुए धर्म प्राण व्यक्ति पूजन, जप और ईश्वर गुणगान करते हैं। आम आदमी की इसी ज़रूरत को पूरा करने के लिए यह नित्य पाठ पुस्तिका प्रस्तुत है।

दैनिक पाठ–पूजन में सहायक इस पुस्तिका में सिद्ध मन्त्र, मानसिक पूजा, रक्षा हेतु प्रार्थना दी गई है। साधक अपनी रुचि और सामर्थ्य के साथ पाठ–पूजन कर सकता है। इसे हम ईश वंदन कहेंगे। यह ईश–वंदन अथवा "नित्य पाठ" भव बन्धन से मुक्ति पाने में सहायक होता है। साधक का ईश्वर के प्रति समर्पण बढ़े यह ही इस हमारे छोटे से संकलन का उद्देश्य है।

आशा है वंदन के इच्छुक साधक इस प्रयत्न को उपयोगी मानेंगे और यदि आवश्यक लगे तो अपने बहुमूल्य सुझाव भी प्रदान करेंगे।

विश्वनाथ मिश्र

प्रधान संपादक

शुभ प्रभातम्

पृथ्वी सगन्धा सरसास्तथापः
स्पर्शी च वायुर्ज्वलनं च तेजः।
नभः सशब्द महता सहैव
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

भावार्थ–सुगन्धयुक्त पृथ्वी रस रूप जल, स्पर्श युक्त वायु, जलाने की क्षमता वाली अग्नि और शब्द गुण रूप आकाश सभी मेरे प्रभात को मंगलमय करें।

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी,
भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः,
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

भावार्थ–ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनिश्चर, राहु और केतु सभी मेरे प्रभात को मंगलमय बनाये।

गायत्री मंत्र

ओ३म भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

भावार्थ–प्राण स्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ तेजस्वी, पापनाशक, देव स्वरूप परमात्मा को हम अन्तरात्मा में धारण करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धि सन्मार्ग की ओर प्रेरित करें।

श्री शिव आराधना

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारूकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृताता।।

भावार्थ–हे भगवान शिव में जीवन भर स्वस्थ व यशवान रहूं अन्त समय में कष्ट भी न हो।

ओ३म् नमः शम्भावाय च, मयोभवाय च,
नमः शंकराय च मयस्कराय च,
नमः शिवाय च शिवतराय च।।

भावार्थ–हे भगवान शंकर! आपको नमन्! आप शान्ति देने वाले सुखदाता, भला करने वाले सुख स्वरूप, आनन्द स्वरूप, कल्याण दाता है।

श्रीराम आराधना

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेदसे।
रघुनाथाय नाथाय, सीताये पतये नमः।।

लोकाभिरामं रणरङ्गधीरं, राजीवनेत्रं रघुनवंशनाथम्।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं, श्रीराम चन्द्रं शरणं प्रपद्ये।।

भावार्थ–राम, रामभद्र, रघुनाथ सीतापति को नमन सभी को सुन्दर लगने वाले, युद्ध कला में धीर, कमल नयन, रघुकुल के स्वामी, करूणा स्वरूप, करुणा कर्ता, श्रीराम की शरण जाता हूं।

श्री कृष्ण आराधना

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणतः क्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः।।

भावार्थ–हे कृष्ण! हे वासुदेव! हे हरि परमात्मा! हे कष्ट को दूर करने वाले गोविन्द! आपको बारम्बार नमन्।

श्री शक्ति मां आराधाना

सर्वमंगल मांगल्यै शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी, नारायणि नमोऽसुते।।

भावार्थ–सब प्रकार के मंगल करने वाली, कल्याणी शिवा, भक्तों के पुरुषार्थों को साधने वाली, त्रिनेत्रा गौरी, शरणागत के लिए वत्सला, तुझे प्रणाम है।

श्री हनुमत आराधना

मनोजवं मारुततुल्यवेगं, जितेन्दियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वारनयूथ मुख्यं, श्रीरामदूतं शरण प्रपद्ये।।

भावार्थ–मन की गति और वायु के वेग के समान शक्ति वाले जितेन्द्रिय बुद्धिमानों में श्रेष्ठ, वानरों में श्रेष्ठ और श्रीराम के दूत, मैं आपकी शरण में हूं।

परम प्रभु आराधाना

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या च द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं ममदेव देवः।।

भावार्थ–हे देवाधिवे! तुम ही मेरे माता, पिता, भाई, मित्र, विद्या और धन हो। हे देवाधिदेव! तुम मेरे सब कुछ हो।

भयमुक्ति हेतु आराधना

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरू।

भावार्थ–हे ईश! हमें अभयदान दो।

मानसिक पूजा

भगवान भाव के भूखे हैं। संसार में ऐसा कोई पदार्थ नहीं जो ईश कृपा से न मिला हो और जिसे हम प्रभु को अर्पित कर सकें। अतः भगवान् की मानसिक पूजा का वाराह पुराण आदि में विशेष महत्व है। आराधक पृथ्वी के रूप में गंध, आकाश के रूप में पुष्प, वायुदेव के रूप में धूप, अग्निदेव के रूप में दीपक, अमृत के समान नैवेद्य अर्पित करता है।

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं परिकल्पयामि।

प्रभो! मैं पृथ्वीरूप गंध (चन्दन) आपको अर्पित करता हूं।

ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि।

प्रभो! मैं आकाशरूप आपको पुष्प अर्पित करता हूं।

ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं परिकल्पयामि।

प्रभो! मैं आपको वायुदेव के रूप में धूप दिखाता हूं।

ॐ रं वह्नयात्मकं दीपं दर्शयामि।

प्रभो! मैं अग्निदेव के रूप में आपको दीप दिखाता हूं।

ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि।

प्रभो! अमृत के समान नैवेद्य आपको अर्पित है।

ॐ सं सर्वात्मकं सर्वोपचारं समर्पयामि।

प्रभो! सर्वात्मा के रूप में संसार के सभी उपचार आपके चरणों में समर्पित। इस प्रकार भावनापूर्वक मानस पूजा करें।

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै–
र्वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः॥

भावार्थ–ब्रह्मा, वरुण, इन्द्र और मरुद्गण दिव्य स्तोत्रों द्वारा जिनकी स्तुति करते हैं, सामवेद के गाने वाले अङ्ग, पद, क्रम और उपनिषदों के सहित वेदों द्वारा जिनका गान करते हैं, योगीजन ध्यान में स्थित तद्गत हुए मन से जिनका दर्शन करते हैं, देवता और असुरगण (कोई भी) जिनके अन्त को नहीं जानते, उन (परमपुरुष नारायण) देव के लिए मेरा नमस्कार है।

अमृतवाणी

जिह्वाया अग्रे मधु मे जिह्वामूले मधूलकम् ममेदह
क्रतावसो मम चित्तमुपायसि।।

मेरी जिह्वा के अग्रभाग में माधुर्य हो। मेरी जिह्वा के मूल में मधुरता हो। मेरे कर्म में माधुर्य का निवास हो और हे माधुर्य! मेरे हृदय तक पहुंचें।

सन्तोषामृततृप्तानां सुखं शान्तिरेव च।

सन्तोष रूपी अमृत से सन्तुष्ट हुए व्यक्ति के लिए सर्वत्र सुख और शान्ति ही है।

स हि सत्यो यं पूर्वेचिद् देवासश्चिद्यमीधिरे।
होतारं मन्द्रजिह्वामित्सुदीतिभिर्विभावसुम्।।

सत्य वही है जो उज्वल है, वाणी को प्रसन्न करता है और जिसे पूर्वकाल में हुए विद्वान उज्वल प्रकाश से प्रकाशित करते हैं।

उदिते परमानन्दे नाहं न त्वं न वे जगत

हृदय में परमानन्द के उदय होने पर अपना पराया नहीं रह पाता।।

सुलभाः पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य व पृथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभ।।

हे राजन् निरन्तर प्रिय बोलने वाले मनुष्य तो सुलभ है किन्तु अप्रिय और हितकारी वचन बोलने वाले और सुनने वाले दुर्लभ है।

किं कुलेन विशालेन विद्याहीने न देहिनाम्।

व्यक्ति अगर विद्या से रहित है तो कुल का बड़प्पन कैसा?

नः श्वः श्वमुपासीत को हि मनुष्यस्य श्वो वेद।

कल के ऊपर कोई कार्य नहीं छोड़ें, क्योंकि मनुष्य के कल को कौन जानता है।

आचार्यो ब्राह्मणो मूर्तिः पिता मूर्तिः प्रजापतेः।
माताः पृथिव्याः मूतिस्तु भ्राता स्वो मूत्तिरात्मनः।।

आचार्य ब्रह्म की मूर्ति है, पिता प्रजापति की मूर्ति है, माता पृथ्वी–स्वरूपा है और भाई स्वयं अपनी ही मूर्ति है।

सर्वेषु भूतेषु दया हि धर्मः

सब प्राणियों पर दया करना ही 'धर्म' है।

बहु कृत्वापि मन्यन्ते स्वल्पमेव महाशयाः

अच्छे लोग भलाई करते हुए अपना स्वार्थ नहीं देखते।

सोऽर्थो यो हस्ते तन्मित्रं यन्निरन्तरं व्यसने।
तद्रूपं यत्र गुणास्तद्विज्ञानं यज्ञ धर्मः।।

धन वही है जो हाथ में है, मित्र वही है, जो आपत्ति में निरन्तर साथ रहे, रूप वही है जिसमें गुण विद्यमान हों और विज्ञान वही है जिसमें धर्म रहे।

रामचरित मानस

दो.–मूक होइ वाचाल, पंगु चढ़इ गिरवर गहन।
जासु कृपा सो दयाल, द्रबउ सकल कलिमल दहन।।

एक अनीह अरूप अनामा। अज सच्चिदानन्द पर धामा।।
ब्रह्म अनामय अज भगवंता। व्यापक अजित अनादि अनंता।।
अकल अनीह अनाम अरूपा। अनुभव गम्य अखंड अनूपा।।
अगुन अदभ्र गिरा गोतीता। सम दरसी अनवद्य अजीता।।
निर्मम निराकार निरमोहा। नित्य निरंजन, सुख संदोहा।।
नेत नेति जेहि वेद निरूपा। निजानंदद निरुपाधि अनूपा।।
व्यापक व्याप्य अखंड अनंता। अखिल अमोघ सक्ति भगवंता।।
सो सुख धाम राम अस नाम। अखिल लोक दायक विश्रामा।।
गो द्विज धेनु देव हितकारी। कृपा सिंधु मानुष तनु धारी।।
काम कोटि छवि स्याम सरीरा। नील कुंज बारिद गम्भीरा।।
भाल बिसाल तिलक झलकाहीं। कच विलोकि अलि अवलि लजाहीं।।
भुज प्रलंब कंजारुन लोचन। स्यामल गात प्रनत भय मोचन।।
कल कपोल श्रुति कुंडल लोला। चिबुक अधर सुंदर मृदु बोला।।
रेखें रुचिर कंबु कल ग्रीवां। जनु त्रिभुवन सुषमा की सीवां।।
कटि तूनीर पीत पट बांधे। कर सर धनुष बाम वर कांधे।।
पद राजीव बरनि नहिं जाहीं। मुनि मन मधुप बसहिं जेहिं माहीं।।

सेवक सुखद सुभग सब अंगा। जय सरीर छवि कोटि अनंगा॥
जय निर्गुन जय जय गुन सागर। सुख मन्दिर सुन्दर अति नागर॥
जय सुर विप्र धेनु हितकारी। जय मद मोह कोह भ्रमहारी॥
सरल सुसाहिबु सील निधानू। प्रनत पाल सर्वग्य सुजानू॥
को रघुबीर सरिस संसारा। सील सनेहु निवाहनि हारा॥
कोमल चित अति दीन दयाला। कारन बिनु रघुनाथ कृपाला॥
प्रभु पितु मातु सुहृद गुरु स्वामी। पूज्य परम हित अंतरजामी॥
धरम सेतु पालक तुम्ह ताता। प्रेम बिबस सेवक सुख दाता॥
मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवउ सो दसरथ अजिर बिहारी॥
मामवंलोकय पंकज लोचन। कृपा विलोकनि सोच विमोचन॥
सुनु सर्वग्य कृपा सुख सिंधो। दीन दयाकर आरत बंधो॥
यह वर मांगउं कृपा निकेता। बसहु हृदयं श्री अनुज समेता॥
करउं प्रनाम करम मन बानी। करहु कृपा सुत सेवक जानी॥
सबइ एक मोरे तुम स्वामी। दीन बन्धु उर अंतरजामी॥
निज बुधि बल भरोस मोहि नाहीं। तातें विनय करउं तव पाहीं॥
बालक ग्यान बुद्धि बल हीना। राखहु सरन नाथ जन दीना॥
आरति हरन सरन सुख दायक। हे रघुकुल सरोज दिन नायक॥
तोर भरोस मोर मन आवा। केहि न सुसंग बड़प्पनु पावा॥
बड़े सनेह लघुन्ह पर करहीं। गिरि निज सरनि सदा तृन धरहीं॥

दो.– श्रवन सुजस सुनि आयऊं, प्रभु भंजन भव भीर।
त्राहि त्राहि आरति हरन, सरन सुखद रघवीर॥

गीता सार

- क्यों व्यर्थ चिन्ता करते हो? किससे व्यर्थ डरते हो? कौन तुम्हें मार सकता है? आत्मा न पैदा होती है, न मरती है।
- जो हुआ, वह अच्छा हुआ। जो हो रहा है वह अच्छा हो रहा है। जो होगा, वह अच्छा ही होगा। तुम बीती बात का अनावश्यक पश्चाताप न करो। भविष्य की भी चिन्ता छोड़ो। वर्तमान तो चल रहा है।
- तुम्हारा क्या है जो तुम रोते हो? तुम क्या लाये थे, जो तुमने खो दिया? तुमने क्या पैदा किया, जो मिट गया? तुम कुछ लेकर नहीं आये। जो लिया, यहीं से लिया। जो दिया, यहीं पर दिया। जो लिया, भगवान से लिया। जो दिया उसी को दिया। खाली हाथ आये खाली हाथ चले। जो आज तुम्हारा है, कल किसी और का था, परसों किसी और का होगा। जिसे तुम अपना समझकर प्रसन्न हो रहे हो, वही तुम्हारे दुःखों का कारण होगा।

❖ परिवर्तन संसार का नियम है। जिसे तुम मृत्यु समझते हो, वही तो जीवन है। एक क्षण में तुम करोड़ों के स्वामी बन जाते हो, दूसरे क्षण में तुम दरिद्र जाते हो। मेरा–तेरा, छोटा–बड़ा, अपना–पराया, मन से मिटा दो, विचार से हटा दो, फिर सब तुम्हारा है, तुम सबके हो।

❖ वैसे न शरीर तुम्हारा है, न तुम इस शरीर के हो। यह शरीर अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी, आकाश से बना है और इसी में मिल जाएगा। बस आत्मा स्थिर है, तो तुम क्या हो?

❖ तुम अपने आप को भगवान को अर्पित करो। यही सबसे उत्तम सहारा है। जो इसके सहारे को जानता है वह भय, चिन्ता, शोक से सर्वदा मुक्त है।

❖ जो कुछ भी तुम करते हो, उसे भगवान को अर्पण करते चलो। ऐसा करने से तुम सदा जीवन मुक्त होने का आनन्द अनुभव करोगे।

ओंकार स्तोत्र

ओ३म् नाम भगवान का, सर्वानन्द निधान।
सब नामों में श्रेष्ठ है, कहते वेद पुराण॥
ओ३म् ब्रह्म की व्याप्ति को, कैसे कहें अलाप।
ब्रह्मा विष्णु महेश का रूप ओ३म् है आप॥
ओ३म् आप तो एक है, उसके रूप अनेक।
ज्ञानी मुनि यह जानते, जिनके विमल विवेक॥
ओ३म् सूर्य का तेज है, शशि सा शीतल रूप।
ओ३म् सकल अनुरूप है, फिर भी अमल अनूप॥
ओ३म् फूल की महक है, फल की मधुर मिठास।
अविचल सुख आनन्द है, काटे सब दुःख-त्रास॥
ओ३म् महान महान है, इससे कौन महान।
बलशाली बस ओ३म् है, रक्षक कृपा निधान॥

ओ३म् उपासक थे सभी, योगी, ऋषि, मुनि संत।
पीर पैगम्बर औलिया, त्यागी विद्यावंत॥
ओ३म् ओ३म् जपते रहो, तन–धन की सुधि खोय।
लगन लगाओ ओ३म् की, ओ३म् जपे सुख होय॥
ओ३म् धनुष सर आत्मा, साधक कर संधान।
श्रद्धा निष्ठा राखिये, लक्ष्य चरण भगवान्॥
ओ३म् मिलाता ईश से, साधक का आधार।
दिव्य रूप में प्रकटते, उर में जगदाधार॥
बिन्दुयुक्त ओकार का, योगी कर नित ध्यान।
इच्छापूरक मोक्षप्रद, नमन् ओ३म् भगवान्॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

मोक्षदायी पुण्य स्मरण

पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः।
पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः॥
अहिल्या द्रौपदी सीता तारा मन्दोदरी तथा।
पंचकंन्या स्मरेन्नित्यं महापातक नाशनम्॥

प्रह्लादनारदपरासरपुण्डरीक,
व्यासाम्बरीषशुकशौनक भीष्मदात्भ्यान्।
रुक्माङ्गदार्जुन वसिष्ठ विभीषणदीन्,
पुण्यानिमान् परमभागवतान्नमामि॥

धर्मो विवर्धति युधिष्ठिर कीर्तनेन।
पापं प्रणश्यति वृकोदरकीर्तनेन॥
शत्रुर्विनश्यति धनञ्जय कीर्तनेन,
माद्रीसुतौ कथयतां न भवन्ति रोगाः॥

अयोध्या मथुरा काशी काञ्ची अवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः॥

शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय, भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय, तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय॥
मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय, नन्दीश्वरप्रथमनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय, तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय॥
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द, सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय॥
वशिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य – मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय, तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय॥
यक्षस्वरूपाय जटाधराय, पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय, तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय॥

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसंन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥

परम पवित्र पंचाक्षर मंत्र "नमःशिवाय" में 'न' नाग की मालाधारी, त्रिलोचन, भस्मधारी, महेश के निमित्त है। 'म' पुण्य सलिला मन्दाकिनी के जल से बने चन्दन को धारण करने वाले नन्दीश्वर, कामरिपु, मन्दार के पुष्प से पूजे जाने वाले आशुतोष के निमित्त है। 'शि' माता गौरी के मुखकमल के निमित्त सूर्य सदृश, नीलकण्ठ, शंकर के निमित्त है। 'व' वसिष्ठ, अगस्त, गौतम आदि मुनियों के ध्यान में रमने वाले, सुसुन्दर नेत्रधारी चन्द्रशेखर के निमित्त है। 'य' यक्ष स्वरूप जटाधारी पिनाकधारी, सनातन शम्भु के निमित्त है।

श्री रुद्राष्टकम्

नमामीशमीशान निर्वाणरुपं । विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं ॥
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं । चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं ॥
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं । गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं ॥
करालं महाकाल कालं कृपालं । गुणागार संसारपारं नतोऽहं ॥
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं । मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं ॥
स्फुन्मौलि कल्लोलिनी चारुगंगा । लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजंगा ॥
चलत्कुण्डलं भ्रु सुनेत्रं विशालं । प्रसन्नानं नीलकंठं दयालं ॥
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं । प्रियं शंकरं सर्वनाथम् भजामि ॥
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं । अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशं ॥
त्रयःशूल निर्मूलनं शूलपाणिं । भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं ॥
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी । सदा सज्जनानन्द दाता पुरारी ॥
चिदानन्द सन्दोह मोहापहारी । प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं । भजन्तीह लोके परे वा नाराणं ॥
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं । प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवास ॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजां । नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं ॥
जरा जन्म दुःखोध तातप्यमानं । प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो ॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति॥

ग्रहकष्ट निवारक मंत्र

सूर्य मंत्र– पद्मासनः पद्माकरो द्विबाहुः पद्मद्युतिः सप्ततुरङ्गोवाहनः।
दिवाकरो लोकगुरुः किरीटीमयि प्रसादं देवाः॥
ॐ ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षण कारकः।
विषम स्थान सम्भूतां पीड़ां हरते ते रविः॥

भावार्थ–हे लोकरक्षक आदित्य मेरी पीड़ा को दूर करो।

चन्द्र मंत्र– श्वेताम्बरः श्वेतविभूषणश्च श्वेतद्युतिर्दण्डधरो द्विबाहुः।
चन्द्रोऽमृत्मावरदः किरीटी मयि प्रसादं विद्द्यातुतेजः॥

भावार्थ–सफेद वस्त्रधारी, श्वेत आभूषण से सुसज्जित, अमृतमय, वरदाता चन्द्रदेव कृपा करें।

मंगल मंत्र– ॐ भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत्सदा।
वृष्टिकृद वृष्टिहर्ता च पीड़ां हरतु ते कुंजः॥

भावार्थ–हे पृथ्वी पुत्र महातेजवान मंगल देवता। आप हमारी पीड़ा हरें।

बृहस्पति मंत्र– पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो देवगुरुः प्रशान्तः।
यथाक्षसूत्रंच कमण्डलुञ्च दण्ड च विभ्रद्वरदोऽस्तु॥

भावार्थ–पीताम्बर धारण किए हुए देवताओं के गुरु बृहस्पति का हम ध्यान करते हैं।

शनि मंत्र– ॐ सूर्यपुत्रो दीर्घदेही विशालाक्षः शिवप्रियः।
मन्दाचार प्रसन्नात्मा पीड़ा हरतु ते शनिः॥

भावार्थ–बड़े नेत्र और विशाल देहधारी सूर्यपुत्र और शिव प्रिय मेरे कष्ट हरें।

रक्षा कवच

सो हमरी रक्षा करें

जाके सिमरन भजन से,
जाएं सभी कलेश।
सो हमरी रक्षा करें,
गौरी पुत्र गणेश।।

जाने लाखों जीव को,
दीनों निर्मल ज्ञान।
सो हमरी रक्षा करें,
सतगुरु नाथ सुजान।।

अनसूया जाये जिन्हें,
दत्तात्रय भगवान।
सो हमरी रक्षा करें,
श्री साईंनाथ महान।।

दें अंधन को दृष्टि जो,
पंगु पाय बल दान।
सो हमरी रक्षा करें,
सिरडी साईं सुजान।।

अर्ध चन्द्रधारी प्रभु,
पार्वती के साथ।
सो हमरी रक्षा करें,
रखें कृपा का हाथ।।

जो लक्ष्मी के नाथ हैं,
श्री विष्णु भगवान।
सो हमरी रक्षा करें,
अपना सेवक जान।।

बाल भगत प्रह्लाद हित,
प्रकटे सब जग जान।
करें अनुग्रह सदा ही,
श्री नरसिंह भगवान।।

जग पावन जिनने कियो,
लियो सदा हरि नाम।
सो हमरी रक्षा करें,
श्री चैतन्य महान।।

जिनने अपने भक्त को,
दिया दया का दान।
सो हमरी रक्षा करें,
प्रभु विट्ठल भगवान्।।

जाके आशिष वचन से,
हो मन्नत परवान।
सो हमरी रक्षा करें,
(श्री) बालाजी भगवान।।

कोटि-कोटि जाकी शरण,
रहें प्रसन्न सदैव।
सो हमरी रक्षा करें,
श्री गुरु नानक देव।।

हिन्दू मुस्लिम सबन को,
कियो धर्म में लीन।
सो हमरी रक्षा करें,
बाबा ताजुद्दीन।।

जाने अपने भक्त की,
रखी सदा ही लाज।
सो हमरी रक्षा करें,
श्री रामचन्द्र महाराज॥

जाके भय से असुर के
छूट जात हैं प्राण।
सो हमरी रक्षा करें,
महावीर हनुमान॥

जा भय टोना टोटका,
भूत प्रेत हो नाश।
सो हमरी रक्षा करें।
साईं सत्य प्रकाश॥

नारायण के स्प जो,
जग को करें सनाथ।
सो हमरी रक्षा करें,
जगतगुरु नवनाथ।।

सुखी किये मार्कण्ड मुनि,
पायो जीवन दान।
सो हमरी रक्षा करें,
श्री शंकर भगवान।।

ऋषि–मुनि महिमा गा रहे,
गावें वेद–पुराण।
सो हमरी रक्षा करें,
महाकालि दें त्राण।।

जाके सिमरन भजन से,
हो सब का कल्याण।
सो हमरी रक्षा करें,
दुर्गा मात महान।।

जाकी कृपा कटाक्ष से,
ज्ञान उजाला छाय।
सो हमरी रक्षा करें,
महा सरस्वती माय।।

प्रेम त्याग की जगत में,
अमृत धार बहाय।
सो हमरी रक्षा करें,
श्री राधाजी आय।।

जीवन जाको देखकर,
अखिल जगत सुखपात।
सो हमरी रक्षा करें,
जनक किशोरी मात।।

जाके तट पर सदा ही,
आयें संत सुजान।
सो हमरी रक्षा करें,
गंगा मातु महान।।

अंगद औ' सुग्रीव संग,
दिये विभीषण राज।
सो हमरी रक्षा करें,
रामचन्द्र महाराज।।

द्रुपद सुता की सभा में,
राखी जाने लाज।
सो हमरी रक्षा करें,
श्री कृष्णचद्र महाराज।।

गणिका गीध अजामिल,
कीन्हें जैसे पार।
सो हमरी रक्षा करें,
रघुवर पतित उधार।।

जाकी पूजा भक्ति से,
हों सेवक के काज।
सो हमरी रक्षा करें,
श्री शनिदेव महाराज।।

सांई गायत्री–ॐ शिरडी वासाय विदमहे,
सच्चिदानन्दाय धीमहि, तन्नो सांई प्रचोदयात।

त्रिगुण स्वामी शिवजी की आरती

ॐ जय शिव ओंकारा, स्वामी हर शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्धांगी गौरा॥ ॐ जय. ॥
एकानन चतुरानन, पंचानन राजै।
हंसानन गरुड़ासन, वृषवाहन साजै॥ ॐ जय. ॥
दो भुज चारु चतुर्भुज, दस भुज अति सोहे।
तीनों रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहे॥ ॐ जय. ॥
अक्षमाला वनमाला मुंडमाला धारी।
चन्दन मृगमद सोहे भाल चन्द्र धारी॥ ॐ जय. ॥
श्वेताम्बर पीताम्बर, बाघम्बर अंगे।
सनकादिक गरुड़ादिक भूतादिक संगे॥ ॐ जय. ॥
कर के मध्ये कमण्डल, चक्र त्रिशूल धरता।
जगकतर्त्ता जग हरता जग पालन करता॥ ॐ जय. ॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्ये, ये तीनों एका॥ ॐ जय. ॥
त्रिगुण स्वामीजी की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी मन वांछित फल पावे॥ ॐ जय. ॥

जगदीश्वर जी (विष्णु) की आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, छिन में दूर करे॥ ॐ जय. ॥
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनसे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तनका॥ ॐ जय. ॥
मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं जिसकी॥ ॐ जय. ॥
तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी॥ ॐ जय. ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता॥ ॐ जय. ॥
तुम हो एक अगोचर, सब के प्राणपति।
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति॥ ॐ जय. ॥
दीन बन्धु दुःखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे।
अपने हाथ उठाओं द्वार पड़ा तेरे॥ ॐ जय. ॥
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा॥ ॐ जय. ॥